तनाव
साहित्य की पत्रिका

पंजीयन क्रमांक - 25888/72

अंक 149 - अक्टूबर + दिसम्बर 2021

आवरण – मरीने पेत्रोशियन

सूरज कल फिर उगेगा

मरीने पेत्रोशियन की कविताएँ (तेंतीस)

अंग्रेज़ी से अनुवाद - उदयन वाजपेयी

मूल्य : एक प्रति - दस रुपये.
विद्यार्थियों के लिए - बीस रुपये.
वार्षिक - पैंतीस रुपये.

वंशी माहेश्वरी, सत्तावन, मंगलवारा, पिपरिया 461775 म.प्र. से संपादित-प्रकाशित.
क़ादरी ऑफ़सेट प्रिन्टर्स, 541 मंगलवारा बस स्टेंड के पास, पिपरिया से मुद्रित.

इस पते पर पत्रिका एवं पत्र भेजें -

- 'सुजल' अपार्टमेंट, 602, म्हात्रे ब्रिज, 100 डी.पी. रोड, शुभारंभ लॉन्स के ठीक सामने, कर्वे नगर, **पुणे** - 411052 (महाराष्ट्र), फ़ोन : 09822444300

या

- **स्नेह पॅराडाइज़,** जे-23, रामबाग़ कॉलोनी, कोथरूड, **पुणे** - 411038 (महाराष्ट्र)

कम्पोज़िंग - क़ादरी ऑफ़सेट, मंगलवारा, पिपरिया - 461775 (म.प्र.)

भूमिका

कैसी सुर्ख़ों सफ़ेद निकली थी
मय भी दुख़्तर अर्मनी की है
मीर

मरीने पेत्रोशियन अर्मेनियाई भाषा की अद्वितीय कवयित्री है। उनकी कविताओं पर कुछ कहने से पहले उनके देश पर कुछ कहता हूँ। मेरे लिए अर्मेनिया का नाम दो लेखकों से जुड़ा है। पहले हैं नार्वेजी कवि हेन्रिक नॉर्ब्राण्ड। वे बरसों पहले विश्वकविता समारोह में शामिल होने भोपाल आये थे और मेरे गहरे मित्र हो गये थे। उन्होंने एक पूरा कविता संग्रह अर्मेनिया पर लिखा था। इसका कारण यह था कि उस्मानिया साम्राज्य ने अपने अन्तिम वर्षों (1915) में अर्मेनियाई लोगों का शक की बिना पर भीषण नरसंहार किया था। उस संहार में पन्द्रह लाख से अधिक अर्मेनियाई मारे गये थे। अनेक तुर्की शहरों से उनका नामोनिशन मिट गया था। उसके फलस्वरूप अर्मेनियाई लोग भाग कर बड़ी संख्या में दुनिया के तमाम देशों में फैल गये। आज भी जितने अर्मेनियाई अर्मेनिया रहते हैं उससे अधिक दूसरे देशों में रहते हैं। यहाँ यह याद रहे कि इस नरसंहार के पीछे भी आधुनिकता की सबसे बड़ी व्याधि थी : राष्ट्रवाद। यह व्याधि अक्सर व्याधि की तरह प्रस्तुत नहीं होती। महात्मा गाँधी से बड़ा राष्ट्रप्रेमी मिलना नामुमकिन है क्योंकि वे यह जानते थे, जब भी राष्ट्रप्रेम मनुष्य–मात्र के प्रति प्रेम और कर्तव्य से ऊपर रखा जाता है और जब उसे ही तमाम मानवीय मूल्यों का निकष बनाने का प्रयत्न होता है मनुष्य मारे जाते हैं और राष्ट्र ध्वस्त हो जाते हैं। इसी व्याधि के वशीभूत जर्मनी में यहूदियों और जिप्सियों को मारा गया, इसी के वशीभूत सोवियत संघ में हत्याएँ हुईं (हाँ, वहाँ भी यहूदियों को मारा गया था) और उसी के कारण भारत जैसी समावेशी सभ्यता में हिंसा का स्तर बढ़ता ही जा रहा है। यह आधुनिक मनुष्य में बद्धमूल मूर्खता ही है जो एक प्रत्यय, एक अवधारणा की वेदी पर लाखों–करोड़ों जीवित मनुष्य को मौत के घाट उतार दिया जाता है। श्रीकान्त वर्मा ने लिखा है : मूर्ख, एक किंवदन्ति के लिए लड़ रहे हैं।

अर्मेनिया से मेरी दूसरी पहचान कई बरसों पहले उर्दू के विद्वान लेखक शम्सुर्रहमान फ़ारूक़ी से बात करते हुई थी। वे मीर का ज़िक्र करते हुए कह रहे थे कि 'बड़े मियाँ' यानी बड़ी उम्र के मीर तक़ी मीर शायद किसी अर्मेनिया लड़की के प्रति आकर्षित हुए होंगे तभी उन्होंने वह शेर लिखा जो हमने इस भूमिका के आरम्भ में दिया है जिसका आशय यह है कि शराब इतनी सुर्ख़ और सफ़ेद है जैसे कोई अर्मेनिया लड़की हो। इसका आशय है कि भारत में अर्मेनियाई लोग कई शताब्दियों पहले से आते रहे हैं। इसका एक प्रमाण और भी है कि मुम्बई में अर्मेनियाई कब्रगाह भी मिलती है, उनका गिरजाघर (सिनेगॉम) भी। भारत हमेशा से

ही समावेशी सभ्यता रही है। यही समावेशिता इस सभ्यता की शक्ति रही है। राष्ट्रवाद के नाम पर इसी समावेशिता को कम करके हम अन्ततः इस सभ्यता को निर्बल कर रहे हैं। संयोग से मीर के उक्त शेर के आधार पर शम्सुर्रहमान फ़ारूक़ी ने मीर पर लिखी अपनी कहानी 'इन सोहबतों में आख़िर' में एक किरदार को अर्मेनिया से ले आये थे।

मरीने पेत्रोशियन ऐसी क्षत-विक्षत सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आयी कवि हैं। उनकी कविताओं में अन्य तत्वों के अलावा अपनी संस्कृति के घावों पर मरहम लगाने का प्रयास भी स्पष्ट नज़र आता है। वे यह मरहम किसी बदले की भावना से नहीं, उसे समझ कर नयी दृष्टि देकर लगाती है। बदले की भावना से ऐतिहासिक भूल सुधार की कोशिश मन्दबुद्धि करते हैं क्योंकि वे ऐसे करते समय स्वयं अपने दोषों के प्रति अन्धे हो जाते हैं।

वे वर्ष 2019 में रज़ा फ़ाउण्डेशन, नयी दिल्ली द्वारा आयोजित एशिया कविता समारोह में भाग लेने दिल्ली आयी थी। मेरी भेंट उनसे तभी हुई। वे मेरे कविता पाठ के बाद मेरे पास आयी और इतनी आत्मीयता से बातें करने लगीं मानो हम बरसों से एक-दूसरे का जानते हों। वे अपनी अपेक्षाकृत स्थूलकाया के बावजूद बेहद फुर्तीली हैं। अपनी माँ के प्रति गहरा लगाव उनमें है। वे लगातार उनकी तस्वीरें दिखाने से भी गुरेज़ नही करती। उनकी कविताएँ सुनते हुए यह महसूस हुआ कि कोई सीधी-सादी सतह पर चलते हुए अचानक ख़तरनाक घाटी में गिरने का सा अनुभव हो रहा है। उनकी कविताओं की, जैसा कि पाठक लक्ष्य करेंगे, ऊपरी सतह बिल्कुल सादी है और उसे पढ़ते हुए यह अनुभव नहीं होता कि आप किसी असाधारण स्थिति से गुज़र रहे हैं। पर जैसे ही आप उसे पढ़कर समाप्त करते हैं, आपको यह अहसास होता है कि आप किसी विभीषिका से गुज़र रहे थे। यह कविता लिखने का शायद सबसे मुश्किल ढंग है क्योंकि मरीने पेत्रोशियन की कविताओं में कविता होने का ज़रा भी आडम्बर नही है। वे कविता के बताये मार्ग पर चलते हुए कविता पूरी करती हैं। न यहाँ पाठक को चौकाने का प्रयास होता है, न अपना हुनर दिखाने का। यहाँ कवि साधारण शब्दों में अप्रत्याशित अन्तर्दृष्टि उद्घाटित करती है और इस तरह रोज़मर्रा इस्तेमाल होने वाले शब्दों को नयी अर्थवत्ता से स्पन्दित कर देती है। उनका जन्म येरेवान, अर्मेनिया में 16 अगस्त 1960 को हुआ था, वे कविताओं के अलावा निबन्ध और अख़बार में स्तम्भ भी लिखती हैं। उनकी कविताओं की कई किताबें अर्मेनियाई भाषा में प्रकाशित हैं, जिनमें से कुछ के शीर्षक इस प्रकार हैं - कविताएँ पहली पुस्तक (1993), अर्मेनियायी समुद्र तट पर (2006) वह बन्दूक जिससे गोली चली थी (2014) उनकी पहली पुस्तक अर्मेनिया के भूतपूर्व सोवियत संघ से स्वतन्त्र होने के दो वर्ष बाद प्रकाशित हुई थी। मरीने कोलिफ़ोर्निया, वियना, न्यूयार्क शहर आदि में प्रवासी लेखक रह चुकी हैं। इन दिनों अर्मेनिया में ही रहती हैं।

-अनुवादक

सूरज कल फिर उगेगा

मरीने पेत्रोशियन की कविताएँ

अंग्रेज़ी से अनुवाद - उदयन वाजपेयी

ही समावेशी सभ्यता रही है। यही समावेशिता इस सभ्यता की शक्ति रही है। राष्ट्रवाद के नाम पर इसी समावेशिता को कम करके हम अन्ततः इस सभ्यता को निर्बल कर रहे हैं। संयोग से मीर के उक्त शेर के आधार पर शम्सुर्रहमान फ़ारूक़ी ने मीर पर लिखी अपनी कहानी 'इन सोहबतों में आख़िर' में एक किरदार को अर्मेनिया से ले आये थे।

मरीने पेत्रोशियन ऐसी क्षत-विक्षत सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आयी कवि हैं। उनकी कविताओं में अन्य तत्वों के अलावा अपनी संस्कृति के घावों पर मरहम लगाने का प्रयास भी स्पष्ट नज़र आता है। वे यह मरहम किसी बदले की भावना से नहीं, उसे समझ कर नयी दृष्टि देकर लगाती है। बदले की भावना से ऐतिहासिक भूल सुधार की कोशिश मन्दबुद्धि करते हैं क्योंकि वे ऐसे करते समय स्वयं अपने दोषों के प्रति अन्धे हो जाते हैं।

वे वर्ष 2019 में रज़ा फ़ाउण्डेशन, नयी दिल्ली द्वारा आयोजित एशिया कविता समारोह में भाग लेने दिल्ली आयी थी। मेरी भेंट उनसे तभी हुई। वे मेरे कविता पाठ के बाद मेरे पास आयी और इतनी आत्मीयता से बातें करने लगीं मानो हम बरसों से एक-दूसरे का जानते हों। वे अपनी अपेक्षाकृत स्थूलकाया के बावजूद बेहद फुर्तीली हैं। अपनी माँ के प्रति गहरा लगाव उनमें है। वे लगातार उनकी तस्वीरें दिखाने से भी गुरेज़ नही करती। उनकी कविताएँ सुनते हुए यह महसूस हुआ कि कोई सीधी-सादी सतह पर चलते हुए अचानक ख़तरनाक घाटी में गिरने का सा अनुभव हो रहा है। उनकी कविताओं की, जैसा कि पाठक लक्ष्य करेंगे, ऊपरी सतह बिल्कुल सादी है और उसे पढ़ते हुए यह अनुभव नहीं होता कि आप किसी असाधारण स्थिति से गुज़र रहे हैं। पर जैसे ही आप उसे पढ़कर समाप्त करते हैं, आपको यह अहसास होता है कि आप किसी विभीषिका से गुज़र रहे थे। यह कविता लिखने का शायद सबसे मुश्किल ढंग है क्योंकि मरीने पेत्रोशियन की कविताओं में कविता होने का ज़रा भी आडम्बर नही है। वे कविता के बताये मार्ग पर चलते हुए कविता पूरी करती हैं। न यहाँ पाठक को चौकाने का प्रयास होता है, न अपना हुनर दिखाने का। यहाँ कवि साधारण शब्दों में अप्रत्याशित अन्तर्दृष्टि उद्घाटित करती है और इस तरह रोज़मर्रा इस्तेमाल होने वाले शब्दों को नयी अर्थवत्ता से स्पन्दित कर देती है। उनका जन्म येरेवान, अर्मेनिया में 16 अगस्त 1960 को हुआ था, वे कविताओं के अलावा निबन्ध और अख़बार में स्तम्भ भी लिखती हैं। उनकी कविताओं की कई किताबें अर्मेनियाई भाषा में प्रकाशित हैं, जिनमें से कुछ के शीर्षक इस प्रकार हैं - कविताएँ पहली पुस्तक (1993), अर्मेनियायी समुद्र तट पर (2006) वह बन्दूक जिससे गोली चली थी (2014) उनकी पहली पुस्तक अर्मेनिया के भूतपूर्व सोवियत संघ से स्वतन्त्र होने के दो वर्ष बाद प्रकाशित हुई थी। मरीने कोलिफ़ोंनिया, वियना, न्यूयार्क शहर आदि में प्रवासी लेखक रह चुकी हैं। इन दिनों अर्मेनिया में ही रहती हैं।

–अनुवादक

सूरज कल फिर उगेगा

मरीने पेत्रोशियन की कविताएँ

अंग्रेज़ी से अनुवाद - उदयन वाजपेयी

दीवार

एक और साल बीत गया
इस संसार में ढेर-से बच्चे पैदा हुए
वे चलना सीखेंगे
वे बोलना सीखेंगे
वे पढ़ना सीखेंगे
और तब वे दीवार के सामने पहुँच जायेंगे
उसी दीवार के जो तुम्हारे सामने खड़ी है
फिर वे उन सवालों को पूछेंगे जिनके अब तक कोई जवाब नहीं है
वे सवाल जिनके सारे जवाब ग़लत साबित हुए हैं
नया साल आ रहा है
नया साल आ रहा है
इस संसार में ढेर-से बच्चे पैदा होंगे

अकेलापन

देखो तो सही – सूर्य की छाँव में कितने सारे शहर हैं
लाखों करोड़ों लोग हैं
पर जैसे ही कोई बड़ी दुर्घटना होती है
तुम अचानक अकेली
बिल्कुल अकेली हो जाती हो
और लाखों करोड़ों लोग
तुम्हारी मदद नहीं कर पाते
क्योंकि वे भी अकेले होते हैं
बिल्कुल अकेले
बावजूद इसके कि उन्होंने सदियों से शहर बनाये
बहुत-से शहर बनाये
कि वे असुरक्षित न हो सकें

पराये शहर में

यह पराया शहर है
यह नदी अनज़ान है
केवल रात परिचित है
वह तुम्हें पहचानती है
तुम भी उसका अंधेरा–चेहरा जानते हो
जाने कब से, न जाने कब से
देखो–लोग धीरे–धीरे
दूर होते जाते हैं
वे घर जा रहे हैं
वे पीने और सोने जा रहे हैं
और तुम ?
तुम्हारा यहाँ घर नहीं है
वह कहीं बहुत दूर है
बहुत बहुत दूर
केवल यहाँ की रात तुम्हारी परिचित है
वह सीसे की तरह नीचे आकर
सीधे तुम्हें दिल में उतरती है

पर वह अब तक वहाँ पहुँची नहीं है

चिड़िया छोटी–सी चिड़िया

चिड़िया
छोटी–सी चिड़िया
तुम पहली किरणों
के साथ आयीं
मेरी खिड़की पर
गाना गाने
ऐसी पैनी तुम्हारी आवाज़ है
ऐसा प्यारा तुम्हारा हर्ष
इस रात में
इस सुनसान में
उड़ कर मत जाओ
रहो कुछ देर
मेरे साथ

देर हो गयी

मैं अकेली हूँ
समुद्र में

आकाश में ऊपर
सीगल
चक्कर काट रही हैं

वे चीख रही हैं
ज़ोर से
अपनी पैनी आवाज़ों में

मै रो
नहीं सकती
उतनी ज़ोर से
अगर मैं वैसा
करूँ भी
सीगल मेरे शब्द
समझ नहीं सकेंगी

अब रात हो चली
देर हो गयी

हर्ष के छोटे छोटे चिराग़

बबूल-पेड़ों, बबूल-पेड़ों
गली तो है
तुम नहीं हो
मैं बच्ची थी जब
शुरुआती स्कूल जाते वक़्त
मुझे तुम्हारे
शहद-स्वाद के सफ़ेद फूलों के शीर्ष को
एक एक कर उनकी
हरी बाहरी पंखुड़ियों से
निकाल कर
खाने में बड़ा मज़ा आता था
उनसे सन्तुष्टि तो नहीं होती थी,
मैं हर्ष से भर जाती थी
बबूल-पेड़ों बबूल-पेड़ों
तुम हर्ष के छोटे छोटे चिराग़ थे
मेरे अवसाद के
देर तक ठहरे कोहरे में

महाहाट का दरवाज़ा

ओह महाहाट की चीज़ें का क्या कहना !
केवल स्वर्ग–इतना ज़रूर है कि
तुम्हें उनकी कीमत चुकानी पड़ती है
बिकाऊ स्वर्ग
अफ़सोस, तुम्हारे पास अपनी पसन्द लायक
पैसे नहीं हैं
लेकिन देखने भर के लिए तुमसे कौन पैसे माँग रहा है
तुम कुछ चीज़ें खरीद सकते हो
बाकी की कल्पना कर लेना
और वास्तविकता ये है कि कल्पना
वास्तविकता से ज़्यादा स्वादिष्ट हुआ करती है
पर वास्तविकता है क्या ?
और कौन वास्तविक है ?
दरवाज़ा बन्द हो चुका
वह फिर नहीं खुलेगा
इसलिए वास्तविकता कुछ नहीं
या यह कहना बेहतर होगा कि
वास्तविकता अब उपलब्ध नहीं है
लेकिन देखो तो सही कि तुम
महाहाट में कितने खुशकिस्मत हो
जहाँ ढेरों कमाल की चीज़ें के साथ
तमाम लोग के बीच
तुम दुखी नहीं रहोगे
तुम जीवन के बारे में बातें करोगे

मुफ़्त की ख़ुशी

यह बारिश किसी अनजान आदमी की खुशी की तरह है
मुझ पर पूरे गुस्से से पड़ रही है
भूल जाओ, अपना दुख भूल जाओ, ये कहती है
भूल जाओ, अपनी चिन्ताएँ, भूल जाओ मूर्खों को
वे बहुत ज्यादा हैं और तुम नहीं झौक सकते
तुम उन सभी को भाड़ में, नहीं झौक सकते
ये कहती हैं, सब भूल जाओ सिवाय मेरे
मैं आज़ाद हूँ, ये कहती है
तुम्हें खुशी के लिए मोल नहीं चुकाने
मैं पानी हूँ जो तब भी था जब कोई न था
तुम्हें जो कुछ भी दिख रहा है, मेरे बाद आया है
तुम्हें जो भी दिख रहा है, ग़ायब हो सकता है, ख़त्म भी
पर मैं वो हूँ जो कभी ग़ायब नही हो सकती
मैं पानी हूँ चमकता धूप में बेमकसद
मैं पानी हूँ बरसता आसमान से बेमकसद
मैं हूँ तुम्हारी मातृभूमि, बारिश कहती है
तुम मुझसे पैदा हुए हो

मरीने पेत्रोशियन

समाप्त पृष्ठ

हर चीज़ केवल एक बार है

हर चीज़ भीगी है
उदास है
वास्तविक है
हर चीज़ केवल एक बार है
केवल एक बार
और तुम उसे शब्दों में ला नहीं सकते
न, न, तुम उसे शब्दों में नहीं ला सकते
तब भी जब तुम ऐसा करने
कवि ही क्यों न बन जाओ

सूरज कल फिर उगेगा

अभी भी देर नहीं हुई
अभी भी वक़्त है
नहीं, जो खो गया, कभी नहीं मिलेगा
और बहुत-सी चीज़ें जो हो सकती थी,
अब कभी नहीं होंगी
लेकिन सूरज कल फिर उगेगा
और लोग फिर आयेंगे
नये लोग आयेंगे
– उदासी तुम्हारे खोने की
– उदासी उनके लिए जो चले गये हमेशा के लिए
इसे तुम नये लोगों को पसन्द करने में बाधा मत बनने देना
इसे तुम आते लोगों को पसन्द करने में बाधा मत बनने देना

भय को ख़त्म करने के बारे में

आरम्भ में
भय था
और मनुष्य
उसे ख़त्म करना चाहता था
इसीलिए उसने आग को
खोजा
मशालों को
मोमबत्तियों को
और न जाने कितनी ही चीज़ों को
अब हर ओर प्रकाश है
तुम जब चाहो प्रकाश है
लेकिन भय गया नहीं
नहीं, भय नहीं गया
और हम अनगिनत
चीज़ों के बीच, हड़बड़ाए-से,
मूल बात भूल चुके हैं
हम भूल चुके हैं कि
हम भय को ख़त्म करना
चाहते थे

बारिश एक-सी हो रही है

बारिश सब पर
एक-सी हो रही है
छोटे पर, बड़े पर
ख़ुशकिस्मत पर, बदकिस्मत पर
बारिश हर ओर हो रही है
हमेशा से हो रही है
मैं पैदा नहीं हुई थी, वह हुई थी
बिजली जैसी चीज़ नहीं थी, वह हुई थी
आदमी आदमी खाता था, वह हुई थी
बारिश होते मैं देख सकती हूँ
बारिश मुझे नहीं देखती
मैं खुश हूँ या उदास
भेड़िये मेरे माँस पर
उत्सव मनाएँ,
उसे फ़र्क़ नहीं पड़ता
बारिश मनुष्य के दूसरी तरफ़ है
हम सब उसके लिए कुछ नहीं है
वह सब पर एक-सी हो रही है
छोटे, बड़े पर
होशियार, बेवकूफ़ पर
नीच और उस पर जो
नीच नहीं है।

थम गयी बारिश, तुम यहाँ नहीं हो

तुमसे मैं बात करना चाहती हूँ,
तुम यहाँ नहीं हो
अम्मा

तुमसे मैं पूछना चाहती हूँ
हम बारिश में
क्यों खड़े रहे थे ?
भीतर क्यों नहीं गये
मतलब, हम क्यों नहीं गये भीतर
अम्मा

मैंने तुम्हारा हाथ
कस कर पकड़ा था
पर वह गीला था
और तुम बोलती नहीं थीं
तुम कभी नहीं बोलती थीं
अम्मा

अब
बारिश थम गयी है
और तुम यहाँ नहीं हो
और तुम कभी नहीं होगी
अम्मा

दो लोगों के बीच

दो लोगों के बीच
हमेशा एक सड़क होती है
जिस पर कारें भागती हैं

अगर तुम सड़क पार कर भी लो
तुम पाओगे
वह क्षण भर पहले वही कर चुका है
कि वह फिर से सड़क के
दूसरी ओर हो सके

दो लोगों के बीच
हमेशा एक सड़क होती है
कारें भागती हैं जिस पर

सूर्य और काला कुत्ता

उस शहर में
मेरा कोई दोस्त या परिचित नहीं था
लेकिन होमर के बारे में
उन्हें वह पता था
जो मुझे भी था
उन्हें पता था, होमर अन्धा था
और बहुत पहले मर गया था
बहुत बहुत पहले
लेकिन कभी
एक होमर था
जैसे मैं हूँ
जैसे तुम हो
जैसे एकीलिस था
हेलेन भी
और हेक्टर भी
हालाँकि मैं इस शहर में एक भी आदमी को नहीं जानता
हालाँकि मैं उनकी भाषा नहीं बोलती
न ही यूनानी मेरी भाषा बोलते थे
लेकिन मैं सूर्य को ख़ूब जानती थी
जब वह हर सुबह उगता था
और मैं उदासी को भी ख़ूब जानती थी
जो बिना आहट आ जाती थी
और मेरे हृदय को दबोच लेती थी
नियति की तरह
जो इडिपस के सामने आयी थी
काले कुत्ते की तरह।

हर चीज़ का अन्त

मैं चाहती हूँ कि इतनी ढेर-सी बर्फ़ गिरे
कि मैं चकित हो जाऊँ
इतनी चकित कि
बोल न पाऊँ
चल न पाऊँ

मैं चाहती हूँ इतनी ढेर-सी बर्फ़ गिरे
कि वह मुझे पूरी तरह ढँक ले
कि मैं भूल जाऊँ कि
मुझे अपनी डबल रोटी खरीदना है
कि मैं भूल जाऊँ
मुझे घर जाना है

कि मैं भूल जाऊँ
कि मैं ठण्ड में ठिठुर कर मर सकती हूँ
कि मैं भूल जाऊँ
कि मृत्यु सब कुछ का अन्त है
जब बर्फ़ ख़ूब गिरेगी
सब कुछ को ढँक देगी
डबल रोटी की
ज़रुरत ख़त्म हो जाएगी
जब बर्फ़
आकाश के
पक्षियों तक को ढँक देगी
घर की ज़रुरत
ख़त्म हो जाएगी

अगर यह अन्त है
तब तो अन्त
उससे कहीं अधिक ख़ूबसूरत है
जितना मैं सोचती थी

अब यह शहर तुम्हारे सामने पेश है

दिन भागते हुए बीत गये, भागते हुए बीत गये
और अब यह शहर तुम्हारे सामने पेश है
यह शहर जिसकी ढेरों गलियाँ
तुम्हें सब देती हैं
वह सब जो तुम जाने कब से
खोजते रहे थे और आख़िरकार पा गये थे
लेकिन उन्हें खोजने की प्रक्रिया में
तुमने अपनी दूसरी प्रिय ढेरों चीज़ें खो दीं

और अब यह समझना मुश्किल है कि
अपने सामने पेश इस ऐश्वर्यशाली शहर को पाकर
जहाँ की सैकड़ों गलियाँ
तुम्हें सब दे रही हैं
वह सब दे रही हैं जो तुम
जाने कब से खोजते रहे थे और
आख़िरकार पा गये थे,
तुम ख़ुशी से रो रहे हो
या खोजने और पाने की
लम्बी प्रक्रिया में
अपनी प्रिय चीज़ों के खो जाने के
दुःख से रो रहे हो ?

चादर

(सोविक के लिए, उसके भाई की मृत्यु के बाद)

अपने से अनजाने व्यक्ति
की मृत्यु पर
तुम्हें अलग उदासी घेरती है

एक तरह की
आकथ उदासी

और तुम पहचान लेते हो
कि यह उदासी
हमेशा तुम्हारे
साथ थी

तुमने सिर्फ़ उसे
महीन लगती
चादरों से
ढँक रखा था

और जब
ऐसे व्यक्ति के शरीर को देखकर
जो जा चुका है
तुम्हें लगता है
कि तुम्हारे भीतर की
महीन चादरें
फट रही हैं
एक के बाद एक

शीर्षक विहीन

मेरा हृदय दु:खी है
मुझे अपनी माँ
और मेरी अपनी याद आती है
जब मैं इतनी छोटी थी कि
मेरा सिर हमारी खिड़की तक नहीं पहुँचता था
और मुझे याद है कि
जब मैं छोटी थी बिना किसी कारण
हमेशा उदासी रहती थी
वह बिना कारण की उदासी थी
स्थायी और भारी
फिर मैं बड़ी हो गयी
अब मेरा दु:ख स्थायी नहीं है
बीच बीच में
हर्ष के कुछ अन्तराल भी आते हैं
पर अब माँ कहीं भी
खोजे नहीं मिलती
वह स्थायी रूप से
जा चुकी

सोवियत संघ, बचपन की स्मृति

स्टेशन का हॉल
शोर से भरा
अनेक आवाज़ें
कोई मेरा हाथ पकड़ लेता है
शायद मेरी माँ
लेकिन हम अकेले नहीं हैं
पिता निश्चय ही कहीं क़रीब ही हैं
केवल बहन साथ नहीं है
शायद वह अब हर कहीं नहीं है
मुझे याद है हमारे आसपास के सभी लोग बतिया रहे हैं,
चल रहे हैं
भाग रहे हैं
शायद ट्रेन क़रीब है
लेकिन हम हिलते तक नहीं
एक जगह खड़े
हम बोलते नहीं
कोई जल्दी नहीं
बहुत समय बाक़ी है
अभी तो

सुकुमार प्राणी

मनुष्य
नाज़ुक प्राणी है
आसानी से डर जाता है
उम्मीद खो देता है आसानी से
आसानी से मर जाता है

मनुष्य हमेशा
कँटीली सेही जैसा है

भले ही वह ऊपर से
भालू जैसा हो
या मगरमच्छ जैसा ही,
उसका हृदय
बहुत तेज़ी से धड़कता है
धड़कते हृदय की तरह

यह ज़रूर है
सेही
मार डाले जाने और
खा ली जाने से
डरती है

मनुष्य
प्रेम न किये जाने से।

बसन्त था ग्रीष्म था

बसन्त था ग्रीष्म था फिर से बसन्त था
बारिश हुई बर्फ़ पड़ी फिर पिघल गयी
बहुत-सी चीज़ें होने को थीं, नहीं हुई
न कभी होंगी।

बर्फ़ की बूँदें केवल बसन्त भर जीवित रहती हैं
मैं अपने पीछे कई बसन्त छोड़ आयी
पर फिर से सूर्य चमकता है मानो कुछ हुआ ही न हो
मानो कोई हमेशा के लिए खोया न हो

सर्दियाँ हैं, ठण्ड है पर मेरे पास हीटर नहीं है
और मुझे पता है बसन्त आता ही होगा
तुम ठण्डी हो गयी थीं और तुम्हें पता था कि तुम्हारे लिए बसन्त नहीं आने वाला
सुबह से मैं तुम्हें याद कर रही हूँ –
तुम्हारा शरीर किस तरह पीड़ा में डूब गया था
सुबह से मैं तुम्हें याद कर रही हूँ और रो रही हूँ।

सर्दियों में बर्फ़ गिरी

तुम दूर सरकते जा रहे हो
बर्फ़ की तरह–
वह गिरी थी एक रात
और उसने सब ढँक लिया था
सारी सड़कें बन्द कर दी थीं
हर आवाज़ चुप कर दी थी
हर दरवाज़े पर इकट्ठा हो गयी थी

अब रास्ते खुल गये हैं
दरवाज़ें खुल गये हैं
और तुम दूर सरकते जा रहे हो
बर्फ़ की तरह
जो दूर सरकती जाती है
जब मैं उसे गर्म अंजुलि में
भरने की कोशिश
करती हूँ।

शरीर का हल्कापन

सुख
चीज़ों का हल्कापन है
शरीर का हल्कापन
चलन का हल्कापन
जब हम सुखी होते हैं – चीज़ें पीड़ा नहीं देतीं
शब्द पीड़ा नहीं देते
असुन्दरता पीड़ा नहीं देती
भद्दा व्यवहार पीड़ा नहीं देता
स्मृति पीड़ा नहीं देती
अतीत पीड़ा नहीं देता
भविष्य पीड़ा नहीं देता
क्योंकि जब हम सुखी होते हैं
अतीत नहीं होता
और न ही भविष्य
सब 'अभी' में बदल जाते हैं
हर, बिल्कुल हर कुछ आकर 'अभी' को भरते हैं
और हर्ष में बदल जाते हैं
गहरे हर्ष में
बिना सीमाओं के हर्ष में
बिना ब्लेक होल्स के

सुख
सारे आयामों के परे का आकाश है
जहाँ मैं और तुम
एक–दूसरे से भिन्न नहीं हैं
हम एक–से हैं
सुख में
हम एक–से हैं।

हर कोई क्यों दौड़ा जा रहा है

हर कोई क्यों दौड़ा जा रहा है
बात करने को कोई बात नहीं है
हमने इतनी सारी नहरें खोदीं
इतने सारे पेड़ लगाये
इतने सारे शहर बसाये
लेकिन तब भी लोग भूखे हैं
वे पैसा कमाने दौड़े जा रहे हैं
जितना रईस हो देश
उतनी तेज़ दौड़ता है
दिन-ब-दिन
तेज़ और, और तेज़ दौड़ता है
बात करने को कोई बात नहीं है

वस्तुओं का स्वर्ग

कोई आसपास नहीं है
कहाँ हूँ मैं ?
मुझे यहाँ अच्छा लग रहा है
वह क्या आवाज़ है ?
मनुष्य की नहीं लगती
वस्तुओं से आ रही है
एक तरह की भुनभुन
वस्तुएँ भुनभुन कर रही हैं
लेकिन बिल्कुल हल्के-से
सिर्फ़ इतनी कि तुम्हें महसूस हो कि वे वहाँ हैं
कि वे अच्छा महसूस कर रही हैं
यह स्वर्ग हो सकता है
वस्तुओं का स्वर्ग
मैं मरी नहीं हूँ
वस्तु में बदल गयी हूँ
मुझे यहाँ अच्छा लग रहा है.

यह है वह दरवाज़ा

क्या कमाल है चमकदार दिसम्बर
बर्फ़-सा चमकदार
सूरज-सा
तुम्हारे ख़्याब-सा चमकदार

क्या तुम्हें वह बालिका याद है ?
वह जो छोटी-सी थी और हठी
वह जो दरवाज़े के पीछे खड़ी थी
भीमकाय दरवाज़े के पीछे
और उसे खोलना चाहती थी
पर उसके हैण्डल तक पहुँच नहीं पा रही थी
उसके छोट-से हाथ हैण्डल तक पहुँच नहीं पा रहे थे

यह है वह दरवाज़ा
ठीक तुम्हारे सामने
अगर तुम अपना हाथ बढ़ाओ, उसे खोल सकती हो
पर जल्दी मत करो, मरीने
शान्त रहो, थोड़ा शान्त
अब तुम छोटी नहीं रहीं
तुम बिल्कुल भी छोटी नहीं रहीं
और तुम्हारा दिल शायद वह सह न पाये
दावाज़े का अन्ततः खुलना
और तुम्हारा पुराना ख़्याब
बर्फ़-सा चकमदार
सूरज-सा चमकदार
खड़ा है तुम्हारे सामने.

कहती है चिड़िया पेड़ पर बैठी

और अब
जब बहुत-सी चीज़ें पीछे छूट गयी हैं
और तुम्हारा दिल खोने के बोझ से भारी होता जा रहा है
रुको मत, मरीने, रुको मत
कहती है चिड़िया पेड़ पर बैठी
अगर तुम रुकी, सब फिर से खो जाएँगे
दोबारा मिलेंगे नहीं
रूको नहीं
चलती रहो
चलती रहो उस जगह जो आगे है
ऐसी सचमुच एक जगह है
वे सभी आगे चलकर वहीं जा रहे थे
वे अब नहीं हैं
पर तुम हो
और अगर पहुँच सकीं
कोई भी नहीं खोएगा
नहीं, कोई भी ऐसे नहीं खोता कि दोबारा पाया न जा सके
चलती रहो
रुको नही जब तक पहुँच न जाओ
कहती है चिड़िया पेड़ पर बैठी.

मानवीय कमज़ोरी

मानवीय दुर्बलता
भयानक चीज़ है
वह एक ऐसे अवकाश की तरह है
जहाँ तोड़ने को एक दीवार तक नहीं
जहाँ सिर्फ़
शून्यता है
बिना शब्दों के
बिना शब्दों बल्कि ध्वनि की सम्भावना के
– उस अवकाश में
भेड़ियों की क़रीब आती
गरजन भी
बचाव लग सकती है
लेकिन सुनो, मत जाओ
उस ओर मत जाओ
मरीने, वापस आ जाओ
वापस आ जाओ गलियों में
भेड़ियों के पास
लोगों की चीख–चिल्लाहटें के क़रीब.

पानी के ऊपर

भाषा बड़ी–सी नदी की तरह है
जब तुम गहराई में होती हो
तुम्हें किनारे दिखायी नहीं देते
कल मैं अपनी कविता का
अँग्रेज़ी में अनुवाद कर रही थी कि
अचानक मुझे किनारे दिखायी दिये
पहले अँग्रेजी का किनारा
फिर अर्मेनियाई का
मेरा दिल तेज़ी से धड़क रहा था
मुझे पता था कुछ होने वाला था
और तभी ऊपर से समुद्र दिखायी दिया
एक समुद्र
फिर एक और
फिर सारे समुद्र आपस में जुड़े हुए
और फिर कोई भी किनारे नहीं थे
न समुद्र थे
केवल पानी था हर तरफ़
और मैंने देखा कि पहला शब्द
ऊपर आ रहा था
पानी के

बड़े अन्तराल से

बड़े अन्तराल के बाद मैं फिर से बैठी
कविताएँ लिखने
और दुखद बात यह थी कि अन्तराल शायद और लम्बा हो सकता था
अगर मेरे जीवन में दुर्घटना न घटती
क्योंकि ऐसा लगा कि मैं वह जगह खो चुकी हूँ
जो कविता लिखने को अर्थ दे सकता था
वह जगह, वह अवकाश था
निश्चय ही था
और अब मानो वह गायब हो चुका था
पर क्या वह चला गया है
या किसी और जगह सरक गया है
यही वह प्रश्न है जिसका जवाब मुझे शीघ्र ही मिलने वाला है
क्योंकि बड़े अन्तराल, बहुत बड़े अन्तराल के बाद
मैं फिर से बैठी हूँ
कविता लिखने

उजली ग्रीष्म सन्ध्या में

उजली ग्रीष्म सन्ध्या में
उस चौराहे पर जहाँ
पापाज़ियन और अवेतीसियन सड़कें
एक दूसरे को काटती हैं
भेड़ियों ने मेरी रास्ता रोक लिया
और मुझे खा लिया
तब फुटपाथ पर बारिश हुई
बारिश वहाँ थी
फुटपाथ वहाँ था
पर दुखी होने मैं वहाँ बाक़ी नहीं थी
मेरी अनुपस्थिति पर कौन दुखी था ?

पुराने साम्राज्य की राजधानी में

(इसे वियाना में लिखा गया था)

केवल पोशाकें बदलती हैं
और मकान की बाहरी दिखावट
शायद डबलरोटी को पैक करने के ढंग
और कई बार शहरों के नाम भी बदले हो सकते हैं
पर बारिश वही रहती है
कुत्ते वही रहते हैं
और आदमी वही आदमी रहता है
अब वह अलग टोप पहनता है
पर रात में
जब सारे टोप उतार दिये जाते हैं
जब वह रोता हुआ
या पत्थर जैसा चुप होता है
वह वही आदमी होता है
वही जिसने ईश्वर को पैदा किया कि
अकेला न रह जाए
पर इतना ज़रुर है कि
इससे कुछ हुआ नहीं

तनाव का 150 वाँ अंक
जनवरी + मार्च 2022

विशिष्ट, वरिष्ठ, मूर्धन्य, रचनाधर्मी
अशोक वाजपेयी
के अनुवाद पर केन्द्रित.

आप से विनम्र अनुग्रह है कि तनाव का वार्षिक शुल्क मात्र पैंतीस रुपये भेजकर सदस्यता ग्रहण कर इस यात्रा को आगे बढ़ायें.